

﴿٢٨﴾ اياتها ٢٨ ﴿٢٩﴾ سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ ٢٨ ﴿٣٠﴾ ركوعاتها ٢

सूरए नूह मक्किय्या है, इस में अठईस आयतें और दो रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ

बेशक हम ने नूह को उस की कौम की तरफ भेजा कि उन को डरा इस से पहले कि उन पर

عَذَابٌ أَلِيمٌ ١ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ٢ أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ

दर्दनाक अज़ाब आए² उस ने फ़रमाया ऐ मेरी कौम मैं तुम्हारे लिये सरीह डर सुनाने वाला हूँ कि अल्लाह की बन्दगी करो³

وَاتَّقُواهُ وَأَطِيعُوا ٣ يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ

और उस से डरो⁴ और मेरा हुक्म मानो वोह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा⁵ और एक मुक़रर मीआद तक⁶ तुम्हें

مُسَىٰ ٤ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ٥ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ٦ قَالَ

मोहलत देगा⁷ बेशक अल्लाह का वा'दा जब आता है हटया नहीं जाता किसी तरह तुम जानते⁸ अर्ज की⁹

رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ٧ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا

ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कौम को रात दिन बुलाया¹⁰ तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना

فِرَارًا ٨ وَإِنِّي كَلِمَادَ عَوْتِهِمْ لَتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ

ही बढ़ा¹¹ और मैं ने जितनी बार उन्हें बुलाया¹² कि तू उन को बख़्शे उन्होंने ने अपने कानों में उंगलियां दे लीं¹³

وَاسْتَعْشُوا آثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا وَاسْتَكْبَارًا ٩ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ

और अपने कपड़े ओढ़ लिये¹⁴ और हट (जिद) की¹⁵ और बढ़ा गुरूर किया¹⁶ फिर मैं ने उन्हें

1 : सूरए नूह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ, अठईस 28 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो निनानवे 999 हर्फ हैं । 2 : दुनिया व आखिरत को 3 : और उस का किसी को शरीक न बनाओ 4 : ना फ़रमानियों से बच कर ताकि वोह ग़ज़ब न फ़रमाए 5 : जो तुम से वक़्ते ईमान तक सादिर हुए होंगे या जो बन्दों के हुक्कू से मुतअल्लिक न होंगे 6 : या'नी वक़्ते मौत तक 7 : कि इस दौरान में तुम पर अज़ाब न फ़रमाएगा । 8 : उस को और ईमान ले आते । 9 : हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने 10 : ईमान व ताअत की तरफ 11 : और जितनी उन्हें ईमान लाने की तरगीब दी गई उतनी ही उन की सरकशी बढ़ती गई 12 : तुझ पर ईमान लाने की तरफ 13 : ताकि मेरी दा'वत को न सुनें 14 : और मुंह छुपा लिये ताकि मुझे न देखें क्यूं कि उन्हें दिने इलाही की तरफ नसीहत करने वाले को देखना भी गवारा न था । 15 : अपने कुफ़र पर 16 : और मेरी दा'वत को कबूल करना अपनी शान के ख़िलाफ़ जाना ।

جِهَارًا ٨ ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ٩ فَقُلْتُ

अलानिया बुलाया¹⁷ फिर मैं ने उन से ब ए'लान भी कहा¹⁸ और आहिस्ता खुप्या भी कहा¹⁹ तो मैं ने कहा

اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ١٠ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ

अपने रब से मुआफ़ी मांगो²⁰ बेशक वोह बड़ा मुआफ़ फ़रमाने वाला है²¹ तुम पर शरटे का मींह

مَدْرَارًا ١١ وَيُيَسِّرْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَيْنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّتٍ وَ

(मूस्लाधार बारिश) भेजेगा और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा²² और तुम्हारे लिये बाग़ बना देगा और

يَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ١٢ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ١٣ وَقَدْ خَلَقَكُمْ

तुम्हारे लिये नहरें बनाएगा²³ तुम्हें क्या हुवा **अल्लाह** से इज़्जत हासिल करने की उम्मीद नहीं करते²⁴ हालां कि उस ने तुम्हें तरह

أَطْوَارًا ١٣ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ١٥ وَجَعَلَ

तरह बनाया²⁵ क्या तुम नहीं देखते **अल्लाह** ने क्यूंकर सात आस्मान बनाए एक पर एक और उन में

الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ١٦ وَاللَّهُ أَشْبَهَكُمْ مِّنَ

चांद को रोशनी किया²⁶ और सूरज को चराग़²⁷ और **अल्लाह** ने तुम्हें सब्जे की तरह

الْأَرْضِ نَبَاتًا ١٧ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ١٨ وَاللَّهُ

ज़मीन से उगाया²⁸ फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा²⁹ और दोबारा निकालेगा³⁰ और **अल्लाह**

17 : बबांगे बुलन्द महफ़िलों में 18 : और दा'वत बिल ए'लान की तक्कार भी की 19 : एक एक से और कोई दकीका दा'वत का उठा न रखा । क़ौम ज़मानए दराज़ तक हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की तक्वीब ही करती रही तो **अल्लाह** तअ़ाला ने उन से बारिश रोक दी और उन की औरतों को बांझ कर दिया, चालीस साल तक उन के माल हलाक हो गए, जानवर मर गए, जब यह हाल हुवा तो हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उन्हें इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया । 20 : कुफ़्रो शिर्क से और ईमान ला कर मग़िफ़रत त़लब करो ताकि **अल्लाह** तअ़ाला तुम पर अपनी रहमतों के दरवाजे खोले क्यूं कि ताआत में मशगूल होना ख़ैरो बरकत और वुस्अते रिज़्क का सबब होता है । 21 : तौबा करने वालों को, अगर तुम ईमान लाए और तुम ने तौबा की तो वोह 22 : माल व औलाद ब कसरत अ़ता फ़रमाएगा 23 : हज़रते हसन **رضي الله تعالى عنه** से मरवी है कि एक शख़्स आप के पास आया और उस ने क़िल्लते बारिश की शिकायत की, आप ने इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया । दूसरा आया उस ने तंगदस्ती की शिकायत की, उसे भी येही हुक्म फ़रमाया । फिर तीसरा आया उस ने क़िल्लते नस्ल की शिकायत की, उस से भी येही फ़रमाया । फिर चौथा आया उस ने अपनी ज़मीन की क़िल्लते पैदावार की शिकायत की, उस से भी येही फ़रमाया, रबीअ़ बिन सबीह जो हाज़िर थे उन्होंने ने अज़्र किया : चन्द लोग आए क़िस्म क़िस्म की हाज़तें उन्होंने ने पेश कीं आप ने सब को एक ही ज़वाब दिया कि इस्तिग़फ़ार करो तो आप ने येह आयत पढ़ी (इन हवाइज के लिये येह क़ुरआनी अ़मल है) । 24 : इस तरह की उस पर ईमान लाओ 25 : कभी नुत्फ़ा, कभी अ़लका, कभी मुज़ाा, यहां तक कि तुम्हारी ख़िल्कत कामिल की, उस की आपरीनिश में नज़र करना उस की ख़ालिकियत व कुदरत और उस की वहदानियत पर ईमान लाने को वाजिब करता है । 26 : हज़रते इब्ने अब्बास व इब्ने उमर **رضي الله تعالى عنهم** से मरवी है कि आप़ताब व माहताब के चेहरे तो आस्मानों की तरफ़ हैं और हर एक की पुशत ज़मीन की तरफ़ तो आस्मानों की लताफ़त के बाइस इन की रोशनी तमाम आस्मानों में पहुंचती है अगर्चे चांद आस्माने दुन्या में है । 27 : कि दुन्या को रोशन करता है और उस की रोशनी चांद के नूर से क़वी तर है और आप़ताब चौथे आस्मान में है । 28 : तुम्हारे बाप हज़रते आदम को उस से पैदा कर के 29 : मौत के बा'द 30 : उस से, रोज़े क़ियामत ।

جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ سَبَاطًا ۝١٩ لِّتَسْكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَا جًا ۝٢٠ قَالَ

ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना बनाया कि उस के वसीअ रास्तों में चलो नूह ने

نُوحٍ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا

अर्ज की ऐ मेरे रब इन्होंने मेरी ना फ़रमानी की³¹ और³² ऐसे के पीछे हो लिये जिसे उस के माल और औलाद ने नुक़सान ही

خَسَارًا ۝٢١ وَمَكَرُوا مَكْرًا كَبِيرًا ۝٢٢ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا

बढ़ाया³³ और³⁴ बहुत बड़ा दाउं खेले³⁵ और बोले³⁶ हरगिज़ न छोड़ना अपने खुदाओं को³⁷ और हरगिज़ न

تَذَرُنَّ وُدًّا وَلَا سُوعَاءً وَلَا يَعْثُو وَيَعُوقُ وَنَسْرًا ۝٢٣ وَقَدْ أَضَلُّوا

छोड़ना वह और न सुवाअ और यगूस और यज़क और नस्स को³⁸ और बेशक उन्होंने ने बहुतों

كَثِيرًا ۝ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝٢٤ مِمَّا خَطَبْتَهُمْ أُعْرِقُوا

को बहकाया³⁹ और तू ज़ालिमों को⁴⁰ ज़ियादा न करना मगर गुमराही⁴¹ अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए⁴²

فَادْخَلُوا نَارًا ۝ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝٢٥ وَقَالَ

फिर आग में दाख़िल किये गए⁴³ तो उन्होंने ने **اللَّهُ** के मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाया⁴⁴ और नूह ने

نُوحٍ رَبِّ لَا تَذَرُ عَلَيَّ الْأَرْضَ مِنَ الْكٰفِرِينَ دَيًّا ۝٢٦ إِنَّكَ إِن

अर्ज की ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़ बेशक अगर

تَذَرُهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَكْفُرُونَ إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝٢٧ رَبِّ

तू इन्हें रहने देगा⁴⁵ तो तेरे बन्दों को गुमराह कर देगे और इन के औलाद होगी तो वोह भी न होगी मगर बदकार बड़ी नाशुक⁴⁶ ऐ मेरे रब

31 : और मैं ने जो ईमान व इस्तिफ़ार का हुक्म दिया था उस को इन्होंने न माना 32 : इन के अ़वाम, गुरबा और छोटे लोग, सरकश रुअसा

और अस्थाबे अम्वाल व औलाद के ताबेअ हुए 33 : और वोह गुरूरे माल में मस्त हो कर कुफ़्रो तुग़यान में बढ़ता रहा 34 : वोह रुअसा

35 : कि उन्होंने ने हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की तक़ीब की और उन्हें और उन के मुत्तबिईन को ईजाएं पहुंचाई 36 : रुअसाए कुफ़्फ़ार अपने अ़वाम

से 37 : या'नी उन की इबादत तर्क न करना 38 : येह उन के बुतों के नाम हैं जिन्हें वोह पूजते थे, बुत तो उन के बहुत थे मगर येह पांच उन

के नज़्दीक बड़ी अज़मत वाले थे, वह तो मर्द की सूरत पर था और सुवाअ औरत की सूरत पर और यगूस शेर की शक़ल और यज़क घोड़े

की और नस्स करगस (गिध) की, येह बुत क़ौमे नूह से मुन्तक़िल हो कर अरब में पहुंचे और मुशिरकीन के क़बाइल से एक एक ने एक एक को

अपने लिये ख़ास कर लिया । 39 : या'नी येह बुत बहुत से लोगों के लिये गुमराही का सबब हुए या येह मा'ना हैं कि रुअसाए क़ौम ने बुतों की

इबादत का हुक्म कर के बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया । 40 : जो बुतों को पूजते हैं 41 : येह हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की दुआ है जब उन्हें

वह्य से मा'लूम हुवा कि जो लोग ईमान ला चुके क़ौम में उन के सिवा और लोग ईमान लाने वाले नहीं तब आप ने येह दुआ की । 42 :

तूफ़ान में 43 : बा'द ग़र्क़ होने के 44 : जो उन्हें अज़ाबे इलाही से बचा सकता । 45 : और हलाक न फ़रमाएगा 46 : येह हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام**

को वह्य से मा'लूम हो चुका था और हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने अपने और अपने वालिदैन और मोमिनीन व मोमिनात के लिये दुआ फ़रमाई ।

اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَ لِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَ

मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को⁴⁷ और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और

الْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝٢٨

सब मुसलमान औरतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही⁴⁸

﴿ ٢٨ آياتها ﴾ ﴿ ٢٨ سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ ٣٠ ﴾ ﴿ ٢٨ رُكُوعَاتُهَا ٢ ﴾

सूरए जिन मक्किय्या है, इस में अठाईस आयतें और दो रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

قُلْ أَوْحَىٰ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا

तुम फरमाओ² मुझे वहय हुई कि कुछ जिनों ने³ मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना⁴ तो बोले⁵ हम ने एक अजीब

عَجَبًا ۚ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَامْتَابِهِ ۖ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۚ وَ

कुरआन सुना⁶ कि भलाई की राह बताता है⁷ तो हम उस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे और

أَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۚ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ

येह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उस ने औरत इख़्तियार की और न बच्चा⁸ और येह कि हम में का

سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۚ وَأَنَا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نَقُولَ الْإِنْسَ وَالْجِنُّ

बे वुकूफ़ अल्लाह पर बढ़ कर बात कहता था⁹ और येह कि हमें खयाल था कि हरगिज़ जिन और आदमी

عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ

अल्लाह पर झूट न बांधेंगे¹⁰ और येह कि आदमियों में कुछ मर्द जिनों के कुछ मर्दों की पनाह

47 : कि वोह दोनों मोमिन थे 48 : अल्लाह तआला ने हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ कबूल फरमाई और उन की कौम के तमाम कुफ़्फ़ार को अज़ाब से हलाक कर दिया । 1 : सूरए जिन मक्किय्या है, इस में दो 2 रकूअ, अठाईस 28 आयतें, दो सो पचास 250 कलिमे, आठ सो सत्तर 870 हर्फ हैं । 2 : ऐ मुस्तफ़ा ! صَلِّ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ 3 : नसीबैन के जिन की ता'दाद मुफ़स्सरीन ने नव 9 बयान की । 4 : नमाजे फ़ज़्र में ब मक़ामे नख़्त्वा मक्कए मुकर्रमा व ताइफ़ के दरमियान 5 : वोह जिन अपनी कौम में जा कर 6 : जो अपनी फ़साहतो बलाग़त व ख़ूबिये मज़ामीन व उलुव्वे मा'ना में ऐसा नादिर है कि मख़्लूक का कोई कलाम उस से कोई निस्बत नहीं रखता और उस की येह शान है 7 : या'नी तौहीद व ईमान की । 8 : जैसा कि कुफ़्फ़ारे जिनो इन्स कहते हैं । 9 : झूट बोलता था बे अदबी करता था कि उस के लिये शरीक व औलाद और बीबी बताता था । 10 : और उस पर इफ़्तिरा न करेंगे, इस लिये हम उन की बातों की तस्दीक करते थे जो कुछ वोह शाने इलाही में कहते थे और खुदावन्दे आलम की तरफ़ बीबी और बच्चे की निस्बत करते थे, यहां तक कि कुरआने करीम की हिदायत से हमें उन का किज़्ब व बोहतान ज़ाहिर हो गया ।